फ़ोटो: कल्पना शर्मा

नई बस्ती की एक झलक

नए विधायकों के लिए सबक

कल्पना शर्मा

पंद्रहवीं लोक सभा का चुनाव जीतने वाली पंद्रह महिला सदस्याओं में भिवानी-महेंद्रगढ़ हरियाणा की श्रुति चौधरी भी हैं। हमारा विचार है कि उन्हें अपने निर्वाचन क्षेत्र के नारनौल कस्बे की नई बस्ती में जाना चाहिए व इस झुग्गी-झोपड़ीनुमा बस्ती की औरतों से बातचीत करनी चाहिए। अगर श्रुति इन औरतों से पूछें कि उनके निर्वाचन क्षेत्र से जीतने वाले लोक सभा सदस्य के लिए सबसे अहम मसला क्या होना चाहिए तो बेहिचक जवाब मिलेगा—पानी और सफ़ाई।

एक ओर नई सरकार अपनी राजनीतिक मांगों के मोलभाव में व्यस्त है और मीडिया राजनैतिक गठबंधनों के बारे में अटकलें लगा रहा है—तो दूसरी ओर भारत के करोड़ों लोग बिना पानी के एक और वर्ष बिता रहे हैं। भोपाल में पानी को लेकर दंगे हो चुके हैं। गुजरात के कुछ शहरों में हफ्ते में एक बार एक घंटे पानी आता है। शहरी भारत के नागरिक पानी के टैंकरों के सहारे गर्मियां गुज़ार रहे है। गांवों में कुएं सूख चले हैं क्योंकि उनका पानी उद्योगों शहरों व कस्बों को सप्लाई किया जा रहा है।

कांग्रेस पार्टी का विश्वास है कि विकास के मूल मंत्र उन्हें चुनाव जीता देंगे। पर क्या अपनी दूसरी पारी में भी सरकार इन दो परस्पर आश्रित मुद्दों को जनता के समक्ष परोस देगी? कैसे? अच्छी से अच्छी स्कीमें अच्छे प्रशासन के अभाव में मुंह के बल गिर जाती हैं। अगर प्रशासन अच्छा भी हो तो मूलभूत सुविधाओं मसलन पानी व स्वच्छता में निवेश न होने के कारण कुछ भी नहीं बदलता। नारनौल इस तथ्य का सटीक उदाहरण है। साठ हज़ार आबादी वाला यह कस्बा दिल्ली-जयपुर हाईवे पर पड़ता है और उत्तर भारत का एक गुमनाम सा भाग है।

मैंने नई बस्ती की महिलाओं के साथ आम चुनावों से पहले एक सुबह मुलाकात की। एक घर के आंगन में

रंग-बिरंगे दुपट्टों से अपना सिर ढके तकरीबन हर उम्र की औरत ने प्रशासन व विकास पर पुरज़ोर तरीके से अपने विचार मेरे सामने रखे।

उनकी सबसे बड़ी समस्या पानी थी। उन्होंने ज़मीन से झांकते पाइप मुझे दिखाए जो इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण था कि वहां पाइप के ज़रिए पानी सप्लाई करने की योजना थी। पर यह योजना बस योजना ही रह गई। पानी नहीं आया, पाइप सूखे पड़े रहे और सूखे पाइप में नल लगाने का कोई फायदा नहीं था। लिहाज़ा औरतें उस सपने को साकार होने के प्रमाण के साथ जीती रहीं जो शायद हो कभी पूरा होगा। पर कागज़ी तौर पर उन्हें पानी मिल रहा है। वे पचास रुपये माहवार उस पानी के लिए भुगतान करती हैं जो उन्हें कभी मिलता ही नहीं है। यही है योजना का कागज़ी स्वरूप।

'हमने दो साल पहले बहुत धरने दिए। सड़के जाम कीं, ज़िला कलैक्टर के दफ्तर जाकर तीन घंटे बैठे रहे। सब आए। दो दिन तक पानी भी आया और फिर बंद हो गया। पहली बार ऐसा हुआ था कि औरतों की आवाज़ों के शोर में पुरुषों की आवाज़ें दब गई थीं। पर इसके बावजूद कुछ नहीं बदला।'

तो फिर वे पानी कहां से लाती हैं? नगरपालिका नई बस्ती से कुछ दूर स्थित टंकियों में पानी की सप्लाई करती है। लिखित कार्यवाही के अनुसार यह सप्लाई हफ्ते में तीन बार होनी चाहिए। पर हकीकत में पानी सप्ताह में एक ही बार आता है। औरतें अपनी बारी का इंतज़ार करती हैं और जितना पानी वे भरकर ले जा सकती है उतना ले जाती हैं। इक्के-दुक्के चांपाकल भी लगे हैं। पर जितना पानी वे भर पाती हैं वह उनकी ज़रूरत के हिसाब से काफी कम है।

"पुरुष काम पर जा सकते हैं। सभी तकलीफ़ें औरतों को सहनी पड़ती हैं। हमें पानी भरना पड़ता है। औरतें सशक्त होती हैं क्योंकि उनको सब कुछ सहन करना पड़ता है," पूर्व निगम पार्षद बिरना देवी कहती हैं।

नई बस्ती की औरतों को जब आप पानी इस्तेमाल करते देखेंगी तब जानेंगी कि पानी को वे कैसे बचाकर चलती हैं। हर एक बूंद को बार-बार इस्तेमाल किया जाता है। कपड़े धोने पर निकाला साबुन का पानी बर्तन साफ़ करने के काम में लिया जाता है। और गंदे पानी को घरों के बाहर नालियां साफ़ रखने के लिए उपयोग किया जाता है क्योंकि पानी के अभाव के साथ-साथ नई बस्ती में सीवर व्यवस्था भी नहीं है। पर आश्चर्य की बात यह है कि इतनी तंगी और परेशानी के बावजूद यह इलाका साफ़-सुथरा है।

तो हमारे नव-निर्वाचित विधायकों के ये महिलाएं कौन सा सबक सिखा सकती हैं? सबक है औरतों से बात करो, उन्हें सुनो, उनकी बुनियादी समस्याओं के बारे में पूछो और उनके तलाशे गये उपायों और समाधान से सीखो।

कल्पना शर्मा *एक स्वायत्त पत्रकार हैं।*
वे विकास व महिला संबंधी मुद्दों पर लिखती हैं।

देश बरबाद किया

कमला भसीन

खुद को आबाद किया देश बरबाद किया
सत्ता पाने के लिये खूब खाने के लिये

खूब इरादे किये, कितने वादे किये
सब्ज़ बागों के सपने दिखाते रहे
दूर ग़रीबी होगी, सबको रोजी होगी
ऐसे नारों से हमको बहकाते रहे
पैंसठ सालों में सही अब तो हम जान गये
सत्ता पाने के लिये ...

जनता फ़ाके करे, जनता भूखी मरे
कॉमनवेल्थ मनाने का शौक़ तुम्हें
लाखों बेघर रहें, पड़े सड़कों पर रहें
ऊंचे होटल बनाने का शौक़ तुम्हें
चाहे कुछ देर से ही अब तो हम जान गये
सत्ता पाने के लिये...

घरों में रोशनी नहीं, साफ़ पानी नहीं
बातें बढ़िया कम्प्यूटर की करते हो तुम
यहां पे स्कूल नहीं, पक्की सड़कें नहीं
सफ़र इक्कीसवीं सदी का करते हो तुम
चेते हैं देर से पर अब तो हम चेत गये
सत्ता पाने के लिये...

("रमईया वक्ता वईया" की धुन पर)